

2027

गद्य खंड

Attididey

आखिरी चट्टान तक

Class - 9th

HINDI

By- अदिति मैम

Lecture - 06



पाठ सूची

1 लेखक परिचय

2 आखिरी चट्टान तक

line to line

3 बहुविकल्पीय प्रश्न

3 लघु उत्तरीय प्रश्न



hello
Cuties

Aditi Ma'am



JOIN MY OFFICIAL TELEGRAM CHANNEL



@PWADITIPUROHITMAAM

Physics Walla

लेखक परिचय



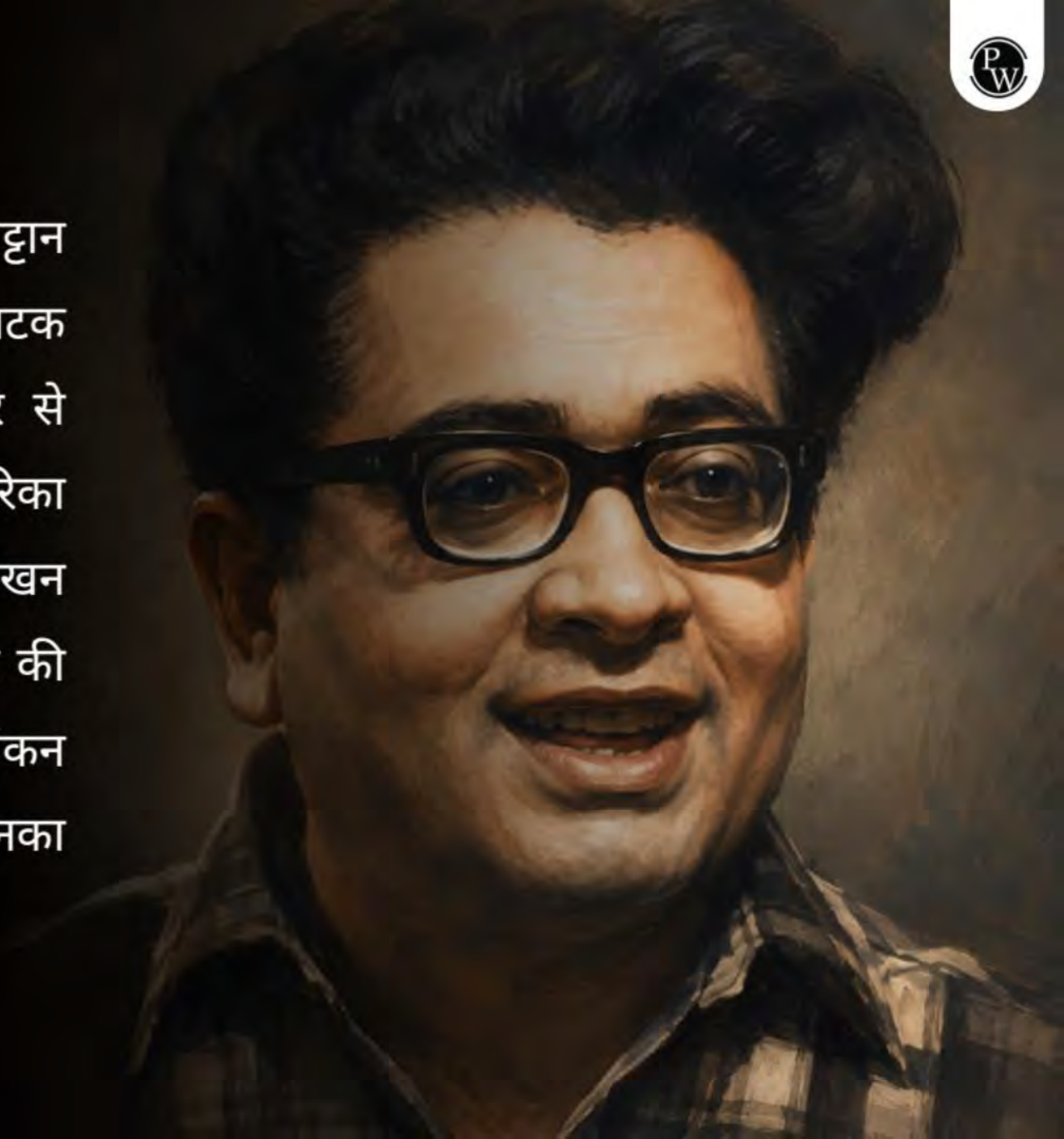
मोहन राकेश

मोहन राकेश

हिंदी साहित्य के बहुमुखी रचनाकार मोहन राकेश का जन्म सन् 1925 को अमृतसर, पंजाब में हुआ था। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, डायरी लेखन, यात्रा-वृत्तांत आदि अनेक विधाओं में साहित्य सृजन किया। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे-अधूरे (नाटक), अंधेरे बंद कमरे, अंतराल, न आने वाला कल (उपन्यास), क्वार्टर तथा अन्य कहानियाँ, नए बादल, वारिस तथा अन्य कहानियाँ (कहानी-संग्रह),

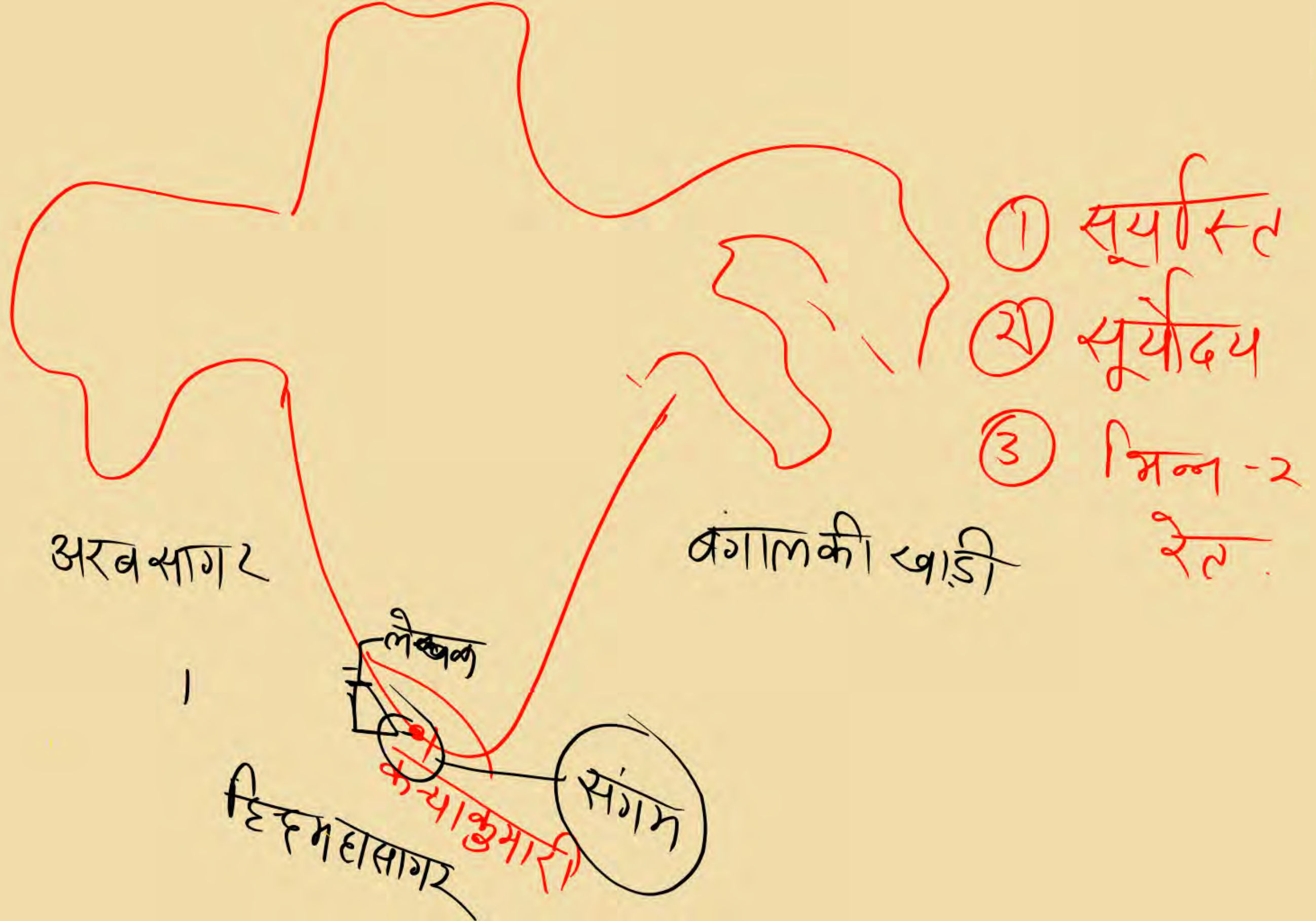


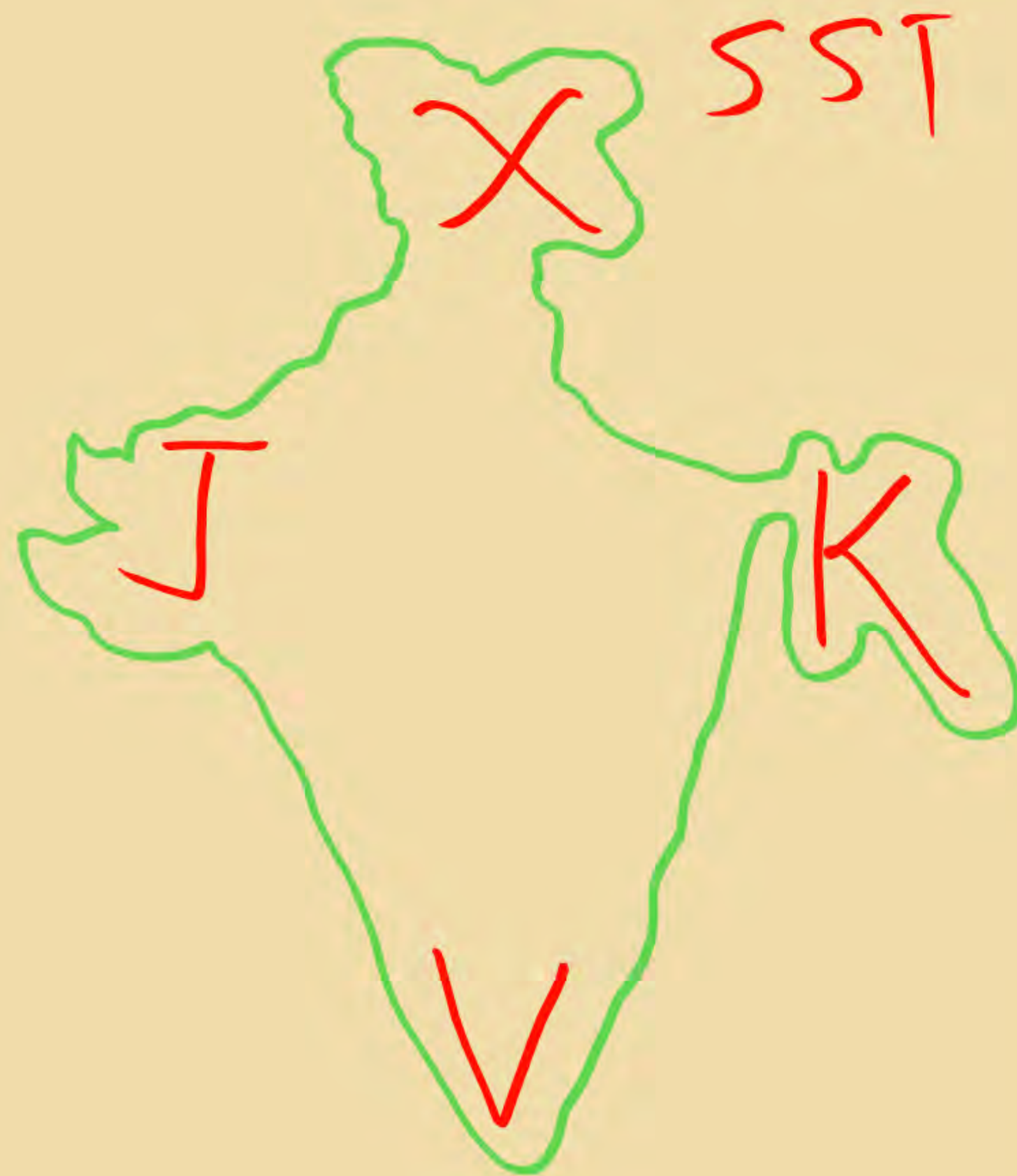
मोहन राकेश की डायरी (डायरी लेखन), आखिरी चट्टान तक (यात्रा-वृत्तांत) इत्यादि। आषाढ़ का एक दिन नाटक के लिए उन्हें 'संगीत नाटक अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कुछ समय तक उन्होंने सारिका नामक हिंदी पत्रिका का संपादन भी किया। उनके लेखन में भावों की गहराई के साथ-साथ आधुनिक जीवन की जटिलताओं और मानवीय संवेदनाओं का सूक्ष्म अंकन मिलता है। सन् 1972 को 48 वर्ष की अल्पायु में उनका निधन हो गया।



पाठ का सार







आखिरी चट्टान तक' एक रोचक यात्रा-वृत्तांत है जिसमें लेखक ने कन्याकुमारी की अपनी यात्रा के अनुभवों को व्यक्त किया है। यात्रा-वृत्तांत में बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर और अरब सागर के मिलन-स्थल पर स्थित कन्याकुमारी के प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन सजीव ढंग से किया गया है। कन्याकुमारी के समुद्री तट के जीवन से साक्षात्कार होने पर लेखक केवल वहाँ की भौगोलिक और सांस्कृतिक सुंदरता का ही वर्णन नहीं करता बल्कि अपने



मन में उठने वाली भावनाओं, विस्मय, रोमांच, शांति और आत्मिक खोज को भी व्यक्त करता है।
यात्रा-वृत्तांत की भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और चित्रात्मक है जो पाठक के मन में दृश्यों को ऐसे जीवंत कर देती है कि पाठक को लगता है कि वह भी लेखक के साथ ही यात्रा कर रहा है। प्रकृति की भव्यता और मानव-मन की गहन अनुभूतियों को यह यात्रा-वृत्तांत एक साथ उजागर करता है।



आखिरी चट्टान तक



आखिरी चट्टान तक

कन्याकुमारी। सुनहले सूर्योदय और सूर्यास्त की भूमि।
केप होटल के आगे बने बाथ टैंक के बाईं तरफ, समुद्र के
अंदर से उभरी ^{काली-नीली चट्टानें} स्याह चट्टानों में से एक पर खड़ा होकर मैं देर
तक भारत के स्थल-भाग की आखिरी चट्टान को देखता
रहा। पृष्ठभूमि में कन्याकुमारी के मंदिर की लाल और सफेद
लकीरें चमक रही थीं। अरब सागर, हिंद महासागर और
बंगाल की खाड़ी- इन तीनों के संगम-स्थल-सी वह चट्टान,
जिस पर कभी स्वामी विवेकानंद ने समाधि लगायी थी, हर
तरफ से पानी की मार सहती हुई स्वयं भी समाधिस्थ-सी
लग रही थी।

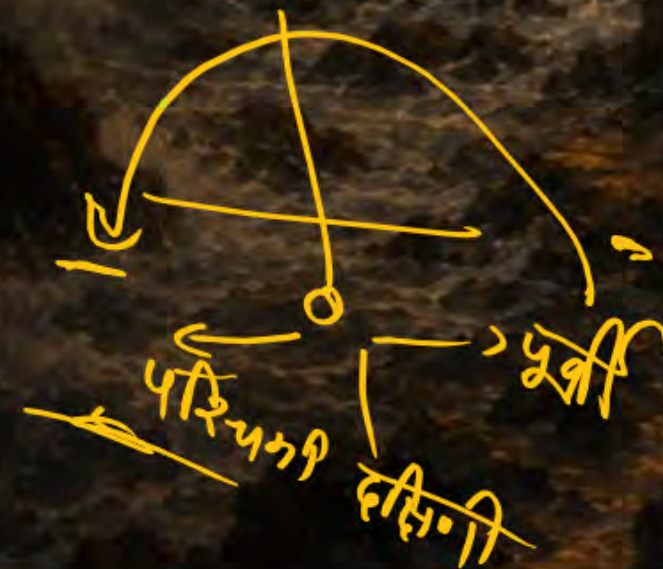
समाधि / नगर



हिंद महासागर की ऊँची-ऊँची लहरें मेरे आस-पास की स्याह चट्टानों से टकरा रही थीं। बलखाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं जिससे उनके ऊपर चूरा बूंदों की जालियाँ बन जाती थीं। मैं देख रहा था और अपनी पूरी चेतना से महसूस कर रहा था - शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति। तीनों तरफ से क्षितिज तक पानी-ही-पानी था, फिर भी सामने का क्षितिज, हिंद महासागर का, अपेक्षया अधिक दूर और अधिक गहरा जान पड़ता था। लगता था कि उस ओर दूसरा छोर है ही नहीं। तीनों ओर के क्षितिज को आँखों में समेटता

जहाँ पर
धरती और आकाश
मिलते हुये प्रतीत (Seem)

मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ, एक जीवित व्यक्ति, दूर से आया यात्री, एक दर्शक। उस दृश्य के बीच में जैसे दृश्य का एक हिस्सा बनकर खड़ा रहा - बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी-सी चट्टान। जब अपना होश हुआ, तो देखा कि मेरी चट्टान भी तब तक बढ़ते पानी में काफी घिर गई है। मेरा पूरा शरीर ^{ऊपर} सिहर गया। मैंने एक नजर फिर सामने के उमड़ते विस्तार पर डाली और पास की एक सुरक्षित चट्टान पर कूदकर दूसरी चट्टानों पर से होता हुआ किनारे पर पहुँच गया। पच्छिमी क्षितिज में सूर्य धीरे-धीरे नीचे जा रहा था। मैं सूर्यास्त की दिशा में चलने लगा।



दूर पच्छिमी तट-रेखा के एक मोड़ पर पीली रेत का एक ऊँचा टीला नजर आ रहा था। सोचा उस टीले पर जाकर सूर्यास्त देखूँगा। यात्रियों की कितनी ही टोलियाँ उस दिशा में जा रही थीं। हम लोग टीले पर पहुँच गए। यह वह 'सैंड

सिपू

रेत की पहाड़ी

हिल' थी जिसकी चर्चा मैं वहाँ पहुँचने के बाद से ही सुन रहा था। सैंड हिल पर बहुत से लोग थे। आठ-दस नवयुवतियाँ, छह-सात नवयुवक और दो-तीन गाँधी टोपियों वाले व्यक्ति। वे शायद सूर्यास्त देख रहे थे। गवर्नमेंट गेस्ट हाउस के बैरे उन्हें सूर्यास्त के समय की कॉफी पिला रहे थे। उन लोगों के वहाँ होने से सैंड हिल बहुत रंगीन हो उठी थी।



कन्याकुमारी की चट्टान किन तीन जल क्षेत्रों के संगम-स्थल जैसी लगती थी?

- ☒ A अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी
- ☐ B लाल सागर, अरब सागर और हिंद महासागर
- ☐ C बंगाल की खाड़ी, प्रशांत महासागर और अरब सागर
- ☐ D हिंद महासागर, प्रशांत महासागर और लाल सागर

कन्याकुमारी की चट्टान पर किसने समाधि लगाई थी?

A

महात्मा गांधी

B

स्वामी विवेकानंद

C

रवींद्रनाथ टैगोर

D

सुभाष चंद्र बोस

लेखक अपनी चट्टान से सुरक्षित स्थान तक कैसे
पहुँचा?

- A नाव से जाकर
- B तैरकर जाकर
- C चट्टानों पर कूदकर
- D पुल से चलकर

सैंड हिल पर सूर्यास्त के समय बैरे लोगों को क्या
पिला रहे थे?

A

चाय

B

कॉफी

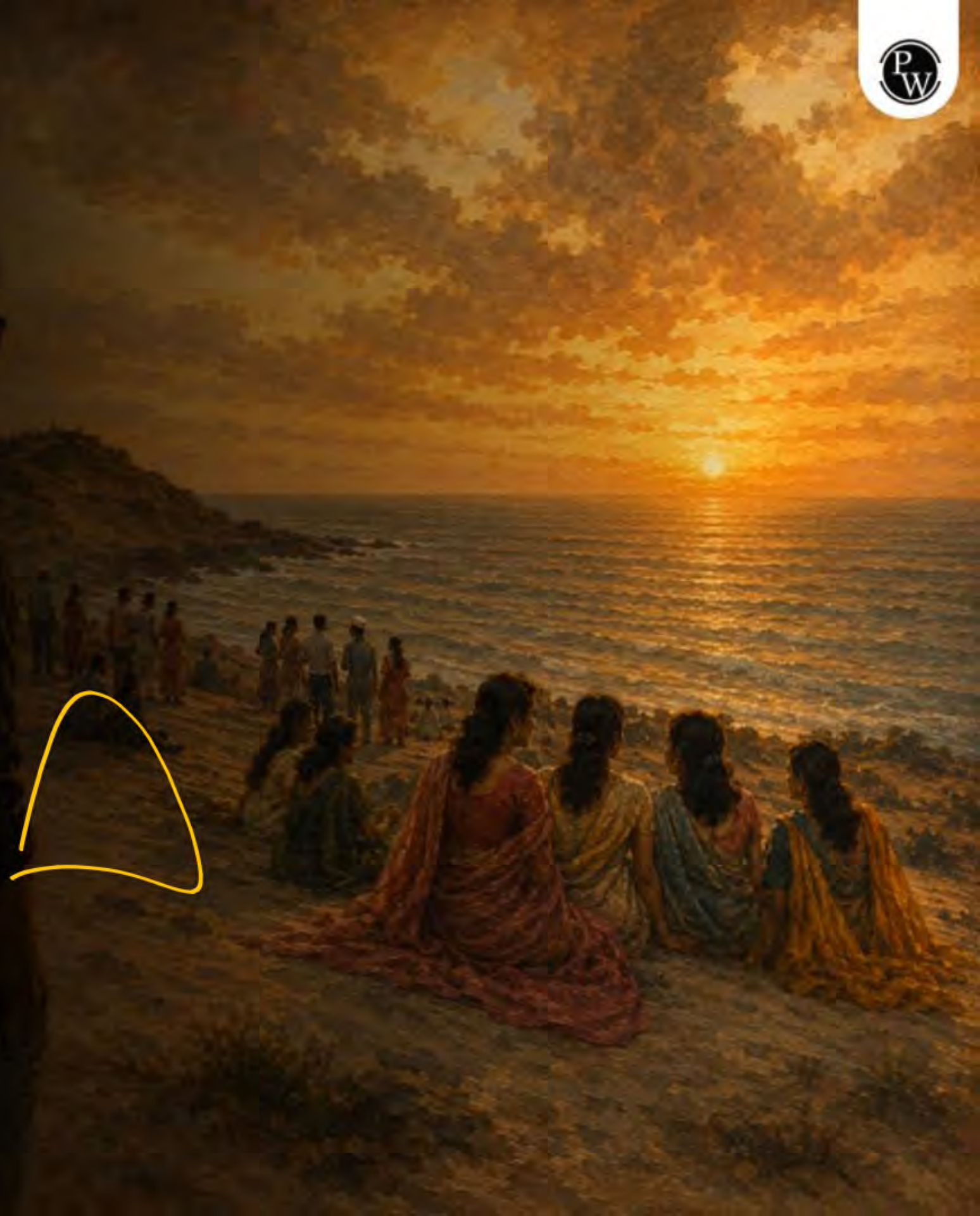
C

शरबत

D

पानी

कन्याकुमारी का सूर्यास्त देखने के लिए उन्होंने विशेष रुचि के साथ सुंदर रंगों का रेशम पहना था। हवा समुद्र की तरह उस रेशम में भी लहरें पैदा कर रही थी। कुछ युवतियाँ वहाँ आकर थकी-सी एक तरफ बैठ गईं - उस पूरे कैनवस में एक तरफ छिटके हुए कुछ बिंदुओं की तरह। उनसे कुछ दूर पर एक रंगहीन बिंदु, मैं, ज्यादा देर अपनी जगह स्थिर नहीं रह सका। सैंड हिल से सामने का पूरा विस्तार तो दिखाई दे रहा था, पर अरब सागर की तरफ एक और ऊँचा टीला था जो उधर के विस्तार को ओट में लिए था। सूर्यास्त पूरे विस्तार की पृष्ठभूमि में देखा जा सके,



इसके लिए मैं कुछ देर सैंड हिल पर रुका रहकर आगे उस टीले की तरफ चल दिया। पर रेत पर अपने अकेले कदमों को घसीटता वहाँ पहुँचा, तो देखा कि उससे आगे उससे भी ऊँचा एक और टीला है। जल्दी-जल्दी चलते हुए मैंने एक के बाद एक कई टीले पार किए। टाँगें थक रही थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था। हर अगले टीले पर पहुँचने पर लगता कि शायद अब एक ही टीला और है, उस पर पहुँचकर पच्छिमी क्षितिज का खुला विस्तार अवश्य नजर आएगा। और सचमुच एक टीले पर पहुँचकर वह खुला विस्तार सामने फैला दिखाई दे गया वहाँ से दूर तक



एक रेत की लंबी ढलान थी, जैसे वह टीले से समुद्र में उतरने का रास्ता हो। सूर्य तब पानी से थोड़ा ही ऊपर था। अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया- ऐसे जैसे वह टीला संसार की सबसे ऊँची चोटी हो, और मैंने, सिर्फ मैंने, उस चोटी को पहली बार सर किया हो। पीछे दाईं तरफ दूर-दूर हटकर उगे नारियलों के झुरमुट नजर आ रहे थे। गूँजती हुई तेज हवा से उनकी टहनियाँ ऊपर को उठ रही थीं। पच्छिमी तट के साथ-साथ सूखी पहाड़ियों की एक श्रृंखला दूर तक चली गई थी जो सामने फैली रेत के कारण बहुत रूखी, बीहड़ और वीरान लग रही थी।

झाड़ियाँ / पत्तियाँ

सूर्य पानी की सतह के पास पहुँच गया था। सुनहली किरणों ने पीली रेत को एक नया-सा रंग दे दिया था। उस रंग में रेत इस तरह चमक रही थी जैसे अभी-अभी उसका निर्माण करके उसे वहाँ उड़ला गया हो। मैंने उस रेत पर दूर तक बने अपने पैरों के निशानों को देखा। लगा जैसे रेत पहली बार उन निशानों से टूटा हो। इससे मन में एक सिहरन भी हुई, हल्की उदासी भी घिर आई। सूर्य का गोला पानी की सतह से छू गया। पानी पर दूर तक सोना-ही-सोना ढुल आया। पर वह रंग इतनी जल्दी-जल्दी बदल रहा था कि किसी भी एक क्षण के लिए उसे एक नाम दे सकना असंभव था।

अनाम

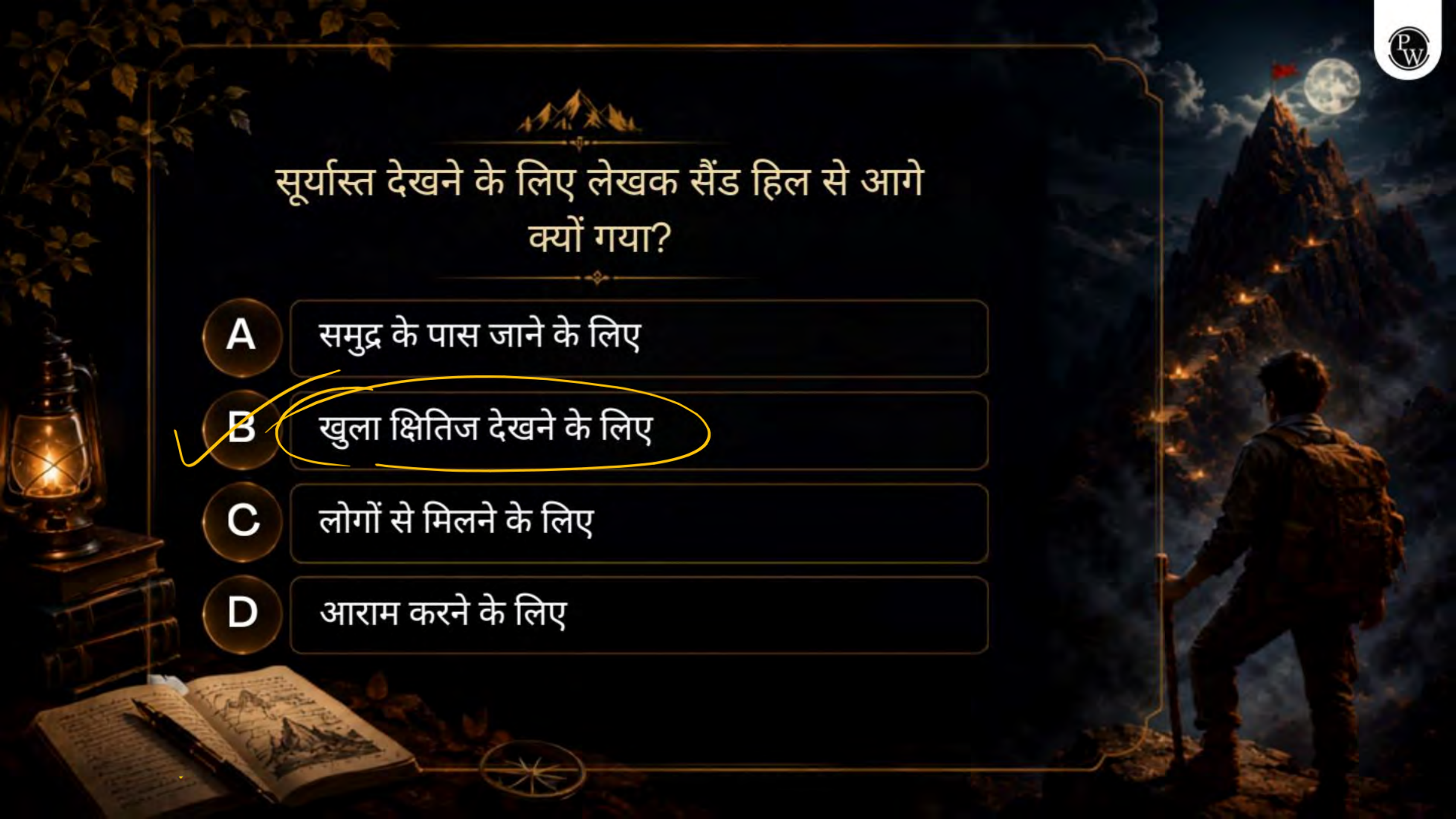
सूर्यास्त देखने के लिए लेखक सैंड हिल से आगे
क्यों गया?

A समुद्र के पास जाने के लिए

B खुला क्षितिज देखने के लिए

C लोगों से मिलने के लिए

D आराम करने के लिए



कई टीले पार करते समय लेखक का मन कैसा था?

- A डर से भरा हुआ
- B थककर निराश
- C उत्साह से भरा हुआ
- D परेशान और दुखी



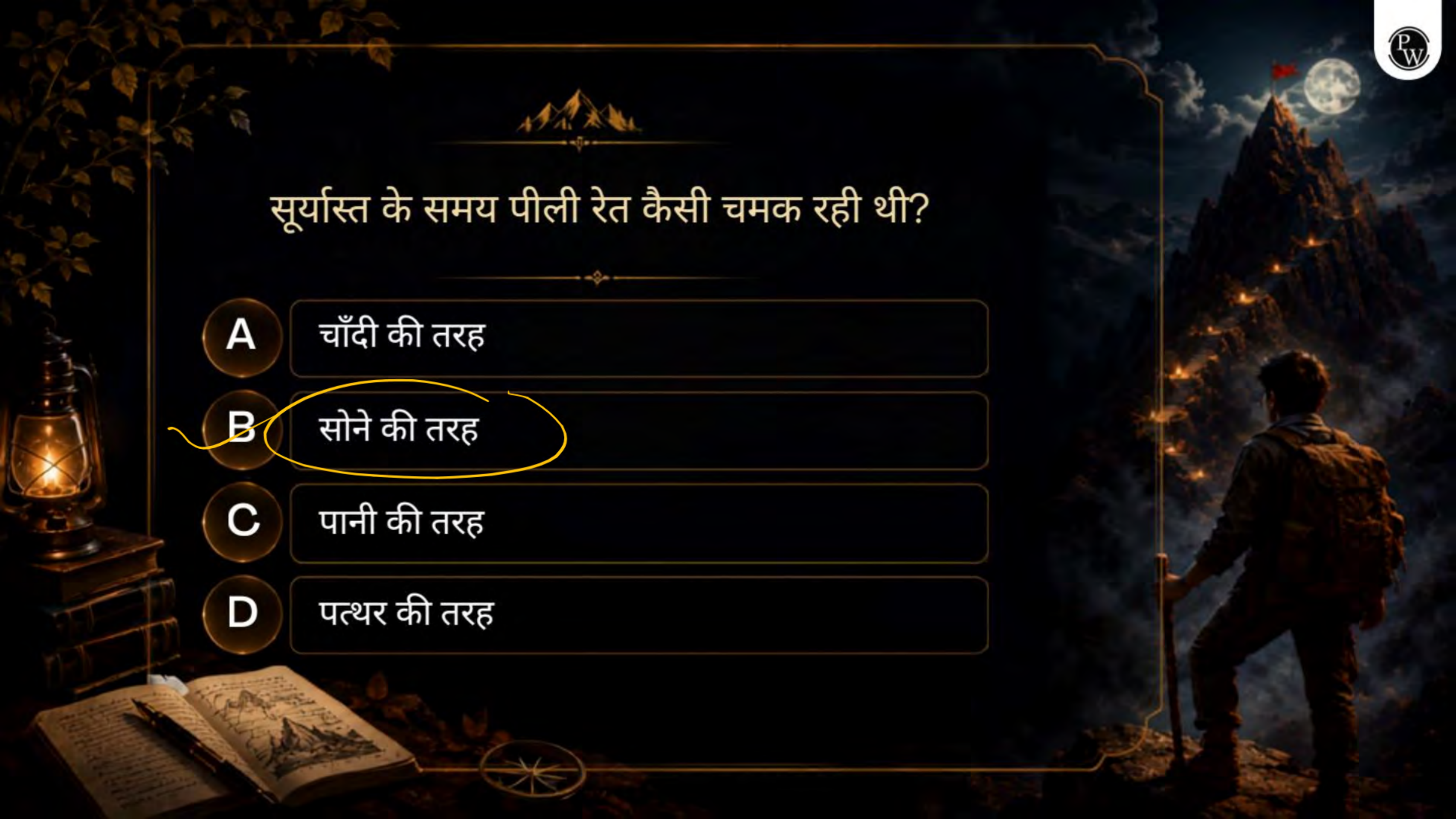
सूर्यास्त के समय पीली रेत कैसी चमक रही थी?

A चाँदी की तरह

B सोने की तरह

C पानी की तरह

D पत्थर की तरह



रेत पर अपने पैरों के निशान देखकर लेखक को
क्या महसूस हुआ?

- A खुशी और गर्व
- B सिहरन और हल्की उदासी
- C डर और चिंता
- D क्रोध और निराशा

प्रोटोमूनि
आगे धरती

Thank you Cuties

